शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्त्री और समाज की मानसिकता : एक अध्ययन

मनीष चौरे (शोधार्थी)
डॉ.मंजू तिवारी (निर्देशिका)
हिंदी-साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप.

मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में नारी का स्थान पुरुषों से भी ऊंचा रहा है। वह त्याग, बलिदान, सेवा, समर्पण, वात्सल्य और ममता की प्रतिमूर्ति होने के साथसाथ शक्ति, प्रेरणा और मानवीय जीवन की धुरी है। समाज की सदियों पुरानी मान्यताओं और रूढ़िवादी परंपराओं के कारण नारी वर्षों से उपेक्षित एवं तिरस्कारपूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर है। समाज का दोहरा नजरिया उनके स्वतंत्रता और स्वाभिमान पर एक कलंक है, जिसे वह सदियों से ढोती चली आ रही है। समाज के महिला सशक्तिकरण और बराबरी के दावे सब झूठे साबित हो रहे हैं। महिलाओं पर हो रहे अत्याचार की खबरों से भरे पत्र-पत्रिकाओं और संचार माध्यमों में इसकी पुष्टि को कोई झुठला नहीं सकता। साल.दर.साल महिला दिवस की औपचारिकता से इसका कोई भला नहीं हो सका। अतः आज आवश्यकता है नारी को अपने अर्ष कालीन देवीय रूप के अनुसरण की, जिससे यह समाज हमेशा से डरते और पूजते आया है। नारी को यह समझना होगा कि उसके अंदर भी असीम.शक्ति, साहस और दृढ़.विश्वास है जो उसे अपना स्वाभिमान और अधिकार दिला सकता है, क्योंकि यह पुरुष सत्तात्मक समाज इतनी आसानी से अपना नजरिया नहीं बदलेगा। अतः अब हमें ही बदलने की जरूरत है। प्रस्तुत शोध पत्र नारी के प्रति समाज की दोहरी मानसिकता को उजागर करता है और नारी को अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए पूरी शक्ति और दृढ़ता से संघर्ष की राह दिखाता है।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत वह समाज में एक परिवार के रूप में रहता है। परिवार में रहते हुए वह मां-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी जैसे और भी रिश्तों से रूबरू होता है, उन्हें देखता और समझता है। एक परिवार में स्त्री के रूप में मां, बहन, पत्नी, दादी, मौसी, बुआ, नानी आदि होती हैं। पुरुष वर्ग इन्हें आदर और सम्मान देते हैं, उनके प्रति उनका नजरिया बहुत ही भावनात्मक एवं और संवेदनशील होता है। समाज में या रिश्तेदारों में भी अगर कोई उन्हें अपशब्द या गलत नजरिए से देखता है तो उनका खून खौल जाता है, वह जान लेने-देने पर उतारू हो जाते हैं।

परंतु वही पुरुष वर्ग जब समाज में निकलता है तो समाज की स्त्रियों के प्रति उनकी सोच और उनकी मानसिकता विकृत हो जाती है, उनका नजरिया उन स्त्रियों के प्रति घटिया हो जाता है। उनके अंदर स्त्रियों के प्रति वह मान-सम्मान और आदर की भावना लुप्त हो जाती है। आखिर वे स्त्रियां भी तो किसी की बहन, बेटी, मां या किसीके घर की इज्जत होगी, पुरुष वर्ग यह क्यों

भूल जाता है। समझ नहीं आता है कि लड़के और लड़कियां एक ही परिवार के संस्कारों और परंपराओं में पलते.बढ़ते हैं, परंतु कहां ऐसी चूक हो जाती है कि लड़कियां पूरी मर्यादा, अनुशासन और संस्कारों के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है। और उसके उलट लड़के उच्छृंखल और अमर्यादित जीवन के साथ आसामाजिक कार्यों में संलग्न हो जाते हैं।

उनके ऊपर किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं होता। वह बे-रोक-टोक यहां वहां घूमते.फिरते हैं। अपनी मन-मानी करते हैं। लड़कियों को छेड़ना, उन पर फब्तियां कसना, उन्हें अपशब्द कहना उनकी आदत में शुमार हो जाता है। घर या समाज में किसी लड़के की हरकतों से दुखी होकर लोग कहते हैं. आवारा हो गया, जाने दो ! पर कभी किसी लड़की को भी ऐसा कोई कहता है। उनकी मां घर वाले कभी नहीं कहते. आवारा हो गई, इसे जाने दो, क्यों ? इसलिए कि लड़कियों के आवारा होने की कल्पना नहीं की जा सकती। क्योंकि अगर लड़की आवारा या अमर्यादित हो गई तो परिवार से लेकर समाज तक उन पर दर्जनों लांछन लगा देंगे, उसे समाज में जीने नहीं देंगे। पुरूष पागल हो रहा है तो होने दो आप तो सजग सचेत नागरिक बनो अपनी शक्ति से पुनः आपको नया निर्माण करना है।

यह हमारे समाज की दोहरी मानसिकता को भी उजागर करता है कि पुरुषों की इस गंभीर हरकतों पर वह चुप्पी साध लेताहै और स्त्रियों के इसी कर्म पर वह थू-थू कर उन्हें उपेक्षित, प्रताड़ित और अपमानित करता है। हमारे समाज की लड़कियां भी उनकी इन ओछी हरकतों को चुपचाप सहनकर उनके दुस्साहस को बल देती हैं। हमारे समाज की स्त्रियों की सहनशीलता की जड़ बहुत गहरी है, जिसके बारे में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णनष् ने लिखा है किशताब्दियों से चली आ रही परंपराओ ने भारतीय नारी को विश्व की सर्वाधिक निस्वार्थ, सार्वधिक आत्मत्यागी तथा सार्वजनिक धैर्यवान नारी बना दिया है, कष्ट उठाना ही जिसका आत्मगौरव है।1 और उसके उलट हमारे देश का कानून भी इतना लचीला है कि उनकी इन गंभीर अपराधों पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं होती ताकि उनके जैसे तमाम लोगों को इस तरह के अमानवीय अपराध करने में कानून और समाज का डर लगे।

उस के विपरीत मां-बाप अपनी बेटियों के समझदार होते ही उसके लिए एक संकुचित दायरे बना देते हैं। बेटी ये नहीं करना, वह नहीं करना, यहां नहीं जाना, वहां नहीं जाना। हिंदू धर्म के अनुसार नारी को बचपन में अपने पिता की आज्ञा माननी चाहिए, युवावस्था में अपने पति की और बुढ़ापे में अपने पुत्र की उसे कभी स्वतंत्र नहीं रहना चाहिए।2 जबकि पुरुषों के लिए ऐसा कोई विधान नहीं।

बेटी के घर से निकलते ही मां-बाप को उसकी चिंता सताने लगती है कि कहीं हमारी बेटी के साथ कोई दुर्घटना या ऊंच-नीच ना हो जाए, नहीं तो हम समाज में मुंह दिखाने लायक ना रहे। जब तक बेटी घर नहीं आ जाती उन्हें यही चिंता सताती रहती है। अगर कारण बस उसे थोड़ी देर हो जाए तो उनकी चिंता दोगुनी हो जाती है। उन्हें पता है कि हमारे समाज में मनचलों और असामाजिक तत्वों की कमी नहीं और उन पर नकेल कसने के लिए हमारा समाज और शासन ना.मुस्तैद है और न ही जिम्मेदार।

आखिर कब तक इसी तरह माता-पिता अपनी लड़कियों की चिंता में डूबे रहेंगे। यह एक छोटा-सा प्रश्न नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज पर एक ऐसा कलंक है जो दिनों-दिन बढ़ता ही जा

रहा है, दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं तो छोटे-छोटे गांव, कस्बों और शहरों में हम अपने देश की शासन या सरकार से क्या उम्मीद कर सकते हैं। रोजाना समाचार पत्रों, न्यूज़ चैनलों में छेड़छाड़, बलात्कार, महिला हिंसा, दहेज.प्रथा, कन्या भ्रूण.हत्या, बाल विवाह, ऑनर किलिंग, महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, पुरुषों की बढ़ती हैवानियत जैसी घटनाएं हमारी संस्कृति को पतन की ओर ले जा रही हैं। इसलिए हमें खुद ही इस दिशा में सार्थक कदम उठाना चाहिए। यह प्रण लेना चाहिए कि हमें अब हमारी लड़कियों को सबल बनाना है, उनके अंदर इतना आत्मविश्वास इतना साहस और जज्बा पैदा करना है कि हमें उनकी चिंता ना करना पड़े, बल्कि वह हमारी ताकत और अभिमान बने। फ्रांसीसी नारीवादी लेखिका सिमोन द बोउवा का ये कथन सच है कि. "स्त्रियां पैदा नहीं होती, बल्कि बना दी जाती है।"3 हमारे समाज के रीति-रिवाज परंपराएं, मान्यताएं और संस्कारों उसे स्त्री बनाते। हमारा समाज स्त्रियों के हृदय में शर्म, हया, लाज, दया, करुणा, त्याग, बलिदान, सहनशीलता और ना जाने ऐसे कितने ही गुण उसमें आत्मसात कराता है। जिसका लाभ इस स्वार्थी पुरुष समाज को जीवन भर मिलता रहता है। और स्त्रियां भी अपना धर्म समझकर इन गुणों को पूरी ईमानदारी के साथ जीवनभर निभाती हैं। परंतु वह उन्हें निभाते-निभाते अपने अस्तित्व अपना गौरव अपना स्वभिमान भूल जाती है। और एक असहाय, अबला नारी के संकुचित फ्रेम में अपने को सीमित कर लेती है। नारीत्व का मिथक आखिर है क्या, क्यों स्त्री को धर्म, समाज, रूढ़ियां और साहित्य. शाश्वत नारीत्व को मिथक के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। सिमोन विश्व की प्रत्येक संस्कृति में पाती है कि या तो स्त्री को देवी के रूप में रखा गया है या गुलाम की स्थिति में। अपनी इन स्थितियों को स्त्री ने सहर्ष स्वीकार किया, बल्कि बहुत्सी जगहों पर सहअपराधी भी रही। आत्महत्या का यह भाव स्त्री में ना केवल अपने लिए रहा, बल्कि वह अपनी बेटी-बहू या अन्य स्त्रियों के प्रति भी आत्मपीड़ाजनित द्वेष रखती आई है। परिणामस्वरुप स्त्री की अधीनता और बढ़ती गई।"4

जाने-अनजाने में माता-पिता अपनी लड़कियों को कमजोर बना देते हैं, जबकि होना यह चाहिए कि हम शुरुआत से ही उनके मन में इतना आत्मविश्वास, साहस और हौसला भर दें कि वह हर एक परिस्थिति का डटकर सामना करें। नारी के अंदर असीमित शक्ति है, उसकी दृढ़-इच्छाशक्ति, उसका हौसला उसका आत्मविश्वास किसी पहाड़ की तरह अटल है। स्त्रियों ने सदियों से अपने लिए ऐसे उच्च आदर्श ऐसे विशुद्ध भूमिका अपने त्याग, परिश्रम, दया, क्षमा, उपकार और सहनशीलता से प्राप्त किए हैं कि पुरुष वर्ग अनेक जन्म लेकर भी स्त्रियों के बराबर या उनके आसपास भी नहीं पहुंच सकता। मुंशी प्रेमचंद जी ने नारी के इन्हीं आंतरिक गुणों को परख कर कहा है कि. पुरुष विकास क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुंचेगा वह स्त्री हो जाएगाा वात्सल्य, स्नेह, दया, कोमलता इन आधारों पर सृष्टि थमी है और यह स्त्रियों के गुण हैं।"5

हम दूसरे देशों के रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, भाषा और पहनावे की तो नकल करते हैं, परंतु उन देशों की अच्छी बातें ग्रहण नहीं कर पाते हैं। जितने भी विकसित या विकासशील देश हैं वहां लोग स्त्रियों को उचित सम्मान और आदर देते हैं। वहां की स्त्रियां अपने परिवार और

अपने देश के विकास में पुरुषों की तरह सभी कार्यों में अपना समुचित योगदान देती हैं। वहां की स्त्रियों को छेड़छाड़, बलात्कार, महिला. उत्पीड़न, घरेलू. हिंसा जैसी अमानवीय घटनाओं का सामना नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति जागरुक होती हैं। हम और हमारा समाज यह भूल जाता है कि स्त्री इस सृष्टि की रचयिता है। वह इस संसार की आदि.शक्ति, आदिजननी है। मनुष्य योनि की संपूर्ण धूरि है स्त्री। अतः उसके अस्तित्व या अधिकार का हनन संपूर्ण मानव जाति पर कलंक है। स्त्रिया: समस्ता सकला जगत्सु तव देवी भेदा:।6 संपूर्ण सृष्टि की महिलाएं हे देवी वस्तुतः तुम्हारा ही विभिन्न स्वरूप है। स्त्रियों के विभिन्न स्वरूपों की डोर पकड़ कर आदि .शक्ति, आदिजननी के मूल स्वरूप को समझना और शक्ति के नाना रूपों के आईने में आज से लेकर आर्षकालीन समाज की स्त्रियों की ढेरों लोकगाथाओं, महागाथाओ, आख्यानों को नए सिरे से पकड़कर समाज के समक्ष लाने में स्त्रियों के प्रति पुरूष समाज की ओछी मानसिकता बदलेगी। साथ ही स्त्रियों को अपने अधिकार और शक्ति का एहसास होगा और पुरुषों पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति से छुटकारा मिलेगा। हमारे समाज को यह दृढ़.संकल्प लेना होगा कि हम अपने देश की स्त्रियों को उचित सम्मान, अच्छी शिक्षा और स्वच्छ वातावरण प्रदान करें और उन्हें अपने अधिकार के प्रति जागरुक बनाएंगे ताकि उन्हें भी एहसास हो कि वह भी इस देश और समाज के महत्वपूर्ण कड़ी हैं और उन्हें भी देश की तरक्की में योगदान देना है।

निष्कर्ष

युगों-युगों का इतिहास अपने किसी ना किसी अंश में नारी के गौरव को प्रतिष्ठित करता रहा है, परंतु भारतीय समाज की यह विडंबना ही है कि महिलाओं के प्रति संकीर्ण मानसिकता और दोहरे नजरिये में कोई बदलाव नहीं आया। महिलाओं के प्रति दिनों.दिन बढ़ती अमानवीय घटनाएं इस बात की पुष्टि करती हैं। अतः आज आवश्यकता है कि स्त्रीजाति अपने अर्षकालीन समाज की स्त्रियों और वीरांगनाओं की लोकगाथाओं, महागाथाओ, आख्याओ का मूल्यांकन कर उनकी शक्ति और तेजस्वी रूप का अनुसरण कर महसूस करें कि उनके अंदर भी अदम्य.शक्ति, असीमित साहस एवं शौर्य हैं, जिससे वह हर परिस्थिति का डटकर सामना कर सकती हैं। पुरुषों पर अपनी आश्रिता कम कर, समाज में अपनी अबला और असहाय छवि को बदल सकती हैं। राष्ट्र और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकती हैं ताकि स्वतः ही महिलाओं के प्रति समाज का संकीर्ण नजरिया बदल जाये।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष रे माधव पब्लिकेशन प्रा.लि., गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2007, पृष्ठ 40

2 शर्मा संजय, व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता, प्रियंक प्रकाशन गृह दिल्ली

3 खेतान प्रभा, नारी : उपेक्षिता, सीमोन द बोउवा की पुस्तक सेकंड सेक्स का हिंदी अनुवाद

4 खेतान प्रभा, नारी उपेक्षिता, द सेकंड सेक्स का हिंदी अनुवाद. भूमिका के अंश

5 प्रेमचंद मुंशी कर्मभूमि वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 222

6 देवी महात्म्य 11.6